*Form No. Ex- 8*

Particulars about the candidate and the subject are checked thoroughly and corrected where necessary.

**Invigilator**

*Sl. No.....* 089

2601

RK

**Signature of Officer-in-Charge**

# KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY

## BPP Examination 2014

## Subject : Hindi

## Paper – 3

**Enrolment Number** | | | | | | | | | | | | **Year** | |

**Medium of Answer :** | |

| Question No. | Marks |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| Total= | |

**INSTRUCTIONS TO CANDIDATES**

1. This booklet contains...16........... **Pages numbering..15........**
2. An Examinee is allowed to bring only Admission Card and Identity Card to the Examination Hall. Any Examinee found in possession of loose papers, books etc. is liable to be Expelled.
3. Enrolment No. and Medium of answer must be written legibly at the specified places. Examinee's name and any other identifying mark which reveals examinees identity shall not be written anywhere in the script.
4. For Making calculations, only the last page provided for rough work shall be used.
5. No pages of the script be torn out .
6. Calculators will not be allowed for making calculations in the examination hall. ***MOBILE PHONES are strictly prohibited in the examination Centre.***
7. No candidate will be allowed to leave or go out of the hall during the First hour of the Examination.
8. A candidate having completed his/her answer, the script must be handed over, to an invigilator before leaving the hall.
9. Contravention of any of the instructions mentioned above shall render a candidate liable for disciplinary action as per regulations of the University.

Examiner's Signature______ ____________

Scrutiniser's Signature______ ____________

Head Examiner's Signature:________

**BPP EXAMINATION 2014**
**Subject : Hindi**
**Paper : III**

Time : 2 Hrs.

Full Marks : 50

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक दो वाक्यों में दीजिए $1 \times 6 = 6$

(क) कवीरदास जी को 'भाषा का डिक्टेटर' किसने कहा था?

(ख) सुरदास द्वारा रचित किसी दो ग्रन्थों का नाम लिखिए।

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी ने सन 1919 में जबलपुर मे कौन सी पत्रिका का संपादन किया था?

(घ) दिनकर किस शब्द का पर्यायवाची है।

(ङ) यशपाल की दो ऐतिहासिक कहानियों के नाम लिखिए।

(च) सम्राट हर्षवर्धन द्वारा आयोजित उत्सव का क्या नाम है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन विकल्प उत्तर दिये गये है। इन में से जो सहि उत्तर है उसे लिखिए। 1×6 = 6

(क) कबीरदास की भाषा को क्या कहते है? ☐

(अ) व्रजबुलि (आ) अवधी (इ) सधुक्कड़ी

(ख) 'नल-दमयन्ती' किसकी रचना है? ☐

(अ) कवीरदास (आ) सुरदास (इ) दिनकर

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कब हुआ था? ☐

(अ) 1888 (आ) 1890 (इ) 1921

(घ) दिनकरजी की पहली फुटकर रचना किस पत्रिका में छपी थी? ☐

(अ) प्रकाश (आ) सरस्बती (इ) जनता

(ङ) पिंजरें की उड़ान किसकी कहानी है? ☐

(अ) यशपाल (आ) दिनकर (इ) माखनलाल चतुर्वेदी

(च) "चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाउ" किसकी उक्ति है? ☐

(आ) सुरदास (आ) दिनकर (इ) माखनलाल चतुर्वेदी

3. किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 6×3 = 18

(क) कबीरदास के जीवन दर्शन के विषय में विस्तारपुर्वक लिखिए।

(ख) दिनकर जी के राष्ट्रीय-भावना के विषय पर लिखिए।

(ग) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उधौ हरि गुन हम चकडोर।
सुन सौ ज्यौ भावै त्यो फेसै, यहै बात कौ ओर॥
पैड़ँ पैड़ँ चलियै तो चलियै, उबट रपटै पाई।
चकडोरी की रीति यहै फिरि गुन ही सौँ लपटाइ।
सुर सहज गुन गंथि हमारे दई श्याम उर माहि।
हरि के हाथ परे तो छुटै, और जतन कछु नाहिं॥

(घ) अर्थ के दुष्टि से शब्द का बर्गीकरण कीजिए।

4. किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए $10\times2 = 20$

(क) 'सत्य का मुल्य' कहानी की विशेषताओं को लिखिए।

(ख) संधि किसे कहते है? संधि के भेदों को लिखिए।

(ग) निम्नलिखित अनुच्छेद का सारांश एक उपयुक्त शीर्षक सहित लिखिए।

दुःख के बर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनन्द-वर्ग में उस्ताह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुःखी और कभी-कभी उस स्थिति सें अपने को दुर रखने का लिऐं प्रयत्नवान भी होते हैं। उस्ताह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्यय-दवारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह से कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ साथ कर्म में प्रवृत्रि होने के आनन्द का योग रहता है। साहसपुर्ण आनंन्द की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं। जिन कर्मो में किसी प्रकार कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सबके प्रति उकंठापुर्ण आनंन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है।